Amire Ahle Sunnat Ki Safare Madeena 1980 Se Wapsi (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 358
Weekly Booklet : 358

अमीरे अहले सुन्नत की सफ़रे मदीना 1980 से वापसी

सफ़्हात 23

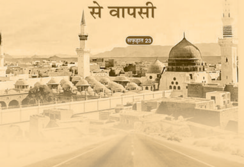

अदबे मदीना 03

मदीने का पक्का वीज़ा लगवाने की ऑफ़र 13

तुम जा नहीं रहे, आ रहे हो 12

मदीने से लौटने वाले को पैग़ामे रज़ा 18

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दावते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अमीरे अहले सुन्नत की सफ़रे मदीना 1980 से वापसी

दुआए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या अल्लाह पाक ! जो कोई 23 सफ़हात का रिसाला : **"अमीरे अहले सुन्नत की सफ़रे मदीना 1980 से वापसी"** पढ़ या सुन ले उसे ग़मे मदीना की दौलत से नवाज़ दे और उसे ख़ैरो आफ़ियत के साथ हर साल मदीनए पाक की हाज़िरी नसीब फ़रमा ।

اٰمين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلَّى اللّٰهُ عليهِ واٰلهٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

जो कोई हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुअ़ज़्ज़म के सामने खड़े हो कर येह आयते शरीफ़ा एक बार पढ़े : ﴿اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾﴾ फिर 70 मरतबा येह अ़र्ज़ करे : صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّمَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه फ़िरिश्ता इस के जवाब में यूं कहता है : ऐ फुलां ! तुझ पर **अल्लाह** पाक का सलाम हो । फिर फ़िरिश्ता उस के लिये दुआ़ करता है : **या अल्लाह** पाक ! इस की कोई ज़रूरत ऐसी न रहे जिस में येह नाकाम हो । (مواہب اللدنیہ، 3/412)

ऐ साइलो ! आ जाओ और झोलियां फैलाओ
दरबारे रिसालत से इन्कार नहीं होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 169)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

मदीनए पाक के बारे में क्या कह दिया......?

आ़शिके़ मदीना अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मदीनए पाक से ह़ज के लिये जाने से पहले या बा'द में मदीनए पाक में किसी ने कह दिया कि जब मौसिमे ह़ज (या'नी ह़ज के दिनों में) मदीनए पाक ख़ाली हो जाता है, जिस पर आ़शिके़ मदीना ने फ़ौरन उसे समझाया कि येह क्या कह दिया आप ने ? मदीनए पाक और...... बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में तो हर लम्ह़े फ़िरिश्तों की ह़ाज़िरी रहती है !

सत्तर हज़ार सुब्ह़ हैं सत्तर हज़ार शाम   यूं बन्दगिये ज़ुल्फ़ो रुख़ आठों पहर की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 220)

ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ का इन्तिख़ाब

गुफ़्त्गू करने से पहले कुछ देर रुक कर ग़ौर करने की आ़दत होनी चाहिये और मदीनए पाक के बारे में तो ऐसे ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ का चुनाव हो कि जिस से इश्क़े रसूल और इश्क़े मदीना छलक्ता हो । **अल्लाह** न करे कि हमारे मुंह से कभी इस पाक सर ज़मीन के मुतअ़ल्लिक़ कोई ना मुनासिब अल्फ़ाज़ निकलें । तारीख़ में आ़शिक़ाने रसूल के मदीनए पाक के अदबो एह़तिराम के ऐसे ऐसे वाक़िआ़त हैं कि अ़क़्ल ह़ैरान हो जाती है जैसा कि एक शख़्स मदीनए मुनव्वरह में हर वक़्त रोता और मुआ़फ़ी मांगता रहता, जब उस से इस की वज्ह पूछी गई तो उस ने जवाब दिया : एक दिन मैं ने मदीनए त़य्यिबा के दही को खट्टा और ख़राब कह दिया, येह कहते ही मेरी निस्बत सल्ब हो गई (या'नी मा'रिफ़त छीन ली गई) और मुझ पर इ़ताब (सख़्त मुआ़मला) हुवा कि दियारे मह़बूब (मह़बूब के शह्र) के दही

को ख़राब कहने वाले ! निगाहे मह़ब्बत से देख, मह़बूब की गली की हर हर चीज़ उ़म्दा है। (बहारे मस्नवी, स. 128 माख़ूज़न)

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा ! बे अदबों से   और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 315)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अदबे मदीना

आ़शिक़ों के इमाम, करोड़ों मालिकिय्यों के पेश्वा, ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के सामने किसी ने कह दिया कि "मदीने की मिट्टी ख़राब है" येह सुन कर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़तवा दिया कि इसे तीस (30) दुर्रे लगाए जाएं और क़ैद में डाल दिया जाए। (الشفاء، 2/57)

सफ़रे मदीना की तय्यारी

इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दूसरे सफ़रे ह़ज में जब जद्दा शरीफ़ पहुंचे तो बुख़ार ह़ाज़िरे ख़िदमत हो गया, इसी ह़ालत में मक्कए पाक ह़ाज़िरी हुई और उ़म्रह शरीफ़ किया। बुख़ार था कि जाने का नाम नहीं ले रहा तो सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बुख़ार के न जाने से मुझे नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी की फ़िक्र हुई, मैं ने इसी ह़ालत में सूए मदीना का इरादा किया। मक्कए पाक के उ़लमाए किराम जो आप की इ़ल्मी शानो शौकत से बेह़द मुतअस्सिर थे, उन्हों ने आ कर बीमारी के बा'द जाने का कहा तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जो अल्फ़ाज़ इर्शाद फ़रमाए वोह सोने के क़लम से लिखने वाले हैं, आप ने फ़रमाया : **"अगर सच पूछिये तो ह़ाज़िरी का अस्ल मक़्सूद ज़ियारते त़यबा है,**

दोनों बार इसी निय्यत से घर से चला हूं।" उन्हों न फिर इसरार किया और आप की त़बीअ़त कैफ़िय्यत आप को बताई तो आप ने येह ह़दीसे पाक पढ़ी : **مَنْ حَجَّ وَلَمْ يَزُرْنِيْ فَقَدْ جَفَانِيْ तरजमा :** जिस ने ह़ज किया और मेरी ज़ियारत न की उस ने मुझ पर जफ़ा की। (كشف الخفاء،2/218،حديث:2458) उ़लमाए किराम ने अ़र्ज़ की : आप एक बार (या'नी पहले सफ़रे ह़ज में) ज़ियारत कर चुके हैं। सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मेरे नज़्दीक ह़दीसे पाक का येह मत़लब नहीं कि उ़म्र में कितने ही ह़ज करे, ज़ियारत एक बार काफ़ी है बल्कि हर ह़ज के साथ ज़ियारत ज़रूर है, अब आप दुआ़ फ़रमाइये कि मैं सरकार (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم) तक पहुंच लूं, रौज़ए अक़्दस पर एक निगाह पड़ जाए अगर्चे उसी वक़्त दम निकल जाए। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 202 ब तग़य्युर) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّين صلَّى اللهُ عليهِ واٰلهٖ وسلَّم

खलीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मद्दाहुल ह़बीब मौलाना मुह़म्मद जमीलुर्रह़मान रज़्वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

भला कौन का'बे को का'बा समझता　　जो शाहा न होता मदीना तुम्हारा

(क़बालए बख़्शिश, स. 32)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मैं मदीने जा रहा हूं

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! कोई घर से ही सफ़रे मदीना का इरादा कर के ह़ज के लिये निकलता है तो कोई ह़ज के लिये जाने वाले से पूछे कि कहां जा रहे हो ? तो वोह "रुख़ उधर है जिधर मदीना है" कहता है। जैसा कि शैखुल ह़दीस, हुज़ूर मुहद्दिसे आ'ज़म ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सरदार

अह़मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ जब अपनी जामेअ़ मस्जिद सुन्नी रज़वी में जुमुआ़ का बयान फ़रमाया करते थे तो लोग दूर दूर से आप का बयान सुनने और आप के पीछे नमाज़े जुमुआ़ अदा करने ह़ाज़िर हुवा करते थे। जिस साल आप का दूसरी बार ह़ज का सफ़र था, उस जुमुए़ जब बयान के लिये तशरीफ़ लाए तो अपने एक शागिर्द से फ़रमाया : लोगों को मेरे सफ़र का बता दो, लोग ख़ुश होंगे। जैसे ही आप के सफ़रे ह़ज का ए'लान किया गया तो आप ने अपने उसी शागिर्द को बुला कर फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! मैं फ़र्ज़ ह़ज कर चुका हूं, इस बार तो सिर्फ़ बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िरी की निय्यत से जा रहा हूं, इस ह़ाज़िरी के सदके़ ह़ज भी कर लूंगा इस लिये येह ए'लान करें कि **"मैं मदीने जा रहा हूं।"**

उस के तुफ़ैल ह़ज भी ख़ुदा ने करा दिये　　अस्ले मुराद ह़ाज़िरी उस पाक दर की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 202, 203)

शर्हे कलामे रज़ा : सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ को फ़नाफ़िर्रसूल का अ़ज़ीम मक़ाम ह़ासिल था और सच्चे आ़शिक़ को अपने मह़बूब के इ़लावा कुछ और नज़र ही नहीं आता, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो अस्ल मक़्सूदे काएनात हैं लिहाज़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अपने इ़श्क़े रसूल का बयान कुछ इस त़रह़ कर रहे हैं कि मैं घर से नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होने के लिये रवाना हुवा हूं और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूरानी दरबार की ज़ियारत की बरकत से मुझे ह़ज की सआ़दत भी मिल गई।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मदीने की त़रह़ कोई नहीं

काएनात के सब से ह़सीनो जमील शह्र दियारे मक्का व मदीना हैं, यहां दिन रात रह़मतों की बरसात होती है, पूरी दुन्या में मक्कए पाक और मदीनए त़य्यिबा जैसा बा बरकत और ख़ूब सूरत शह्र नहीं। येह दोनों मुबारक शह्र आ़शिक़ाने रसूल की आंखों के नूर और दिलों के सुरूर हैं। दुन्या की सारी ख़ूब सूरतियां, रौनक़ें अ़रब के रेगिस्तान पर क़ुरबान ! मदीनए पाक में वोह आरामो सुकून, चैनो क़रार है जो दुन्या के किसी शह्र में नहीं, इस बा बरकत शह्र में वोह कशिश है जो दुन्या में और कहीं नहीं, इस मुबारक शह्र में वोह रौनक़ें हैं जो दुन्या के किसी ख़ित़्त़े में नहीं। येह मुबारक शह्र तो ऐसा है कि इन्सान तो इन्सान फ़िरिश्ते भी यहां बार बार ह़ाज़िरी की तमन्ना रखते हैं। आ़शिक़े माहे रिसालत आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

येह बदलियां न हों तो करोड़ों की आस जाए   और बारगाहे मर्ह़मत आ़म तर की है
मा'सूमों को है उ़म्र में सिर्फ़ एक बार बार   आ़सी पड़े रहें तो सला उ़म्र भर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 221)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : बदलियां : तब्दीलियां। **आस :** उम्मीद। **मर्ह़मत :** रह़मत। **आ़म तर :** हर एक के लिये। **मा'सूम :** फ़िरिश्ते। **आ़सी :** गुनहगार। **सला :** ए'लान, इजाज़त।

शर्ह़े कलामे रज़ा : सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस से पहले वाले शे'र में ह़दीसे पाक का मज़्मून बयान करते हुए लिखते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गुहर बार में रोज़ाना सुब्ह़ो शाम सत्तर सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते ह़ाज़िर हो कर सलातो सलाम अ़र्ज़ करते हैं, जो

एक बार आ गए वोह फिर दोबारा क़ियामत तक हाज़िर नहीं हो सकते क्यूं कि फ़िरिश्तों की ता'दाद ही इस क़दर है, अगर येह बारियां न लगें तो फिर बारगाहे रिसालत में करोड़ों फ़िरिश्तों की हाज़िरी की उम्मीद चली जाए जब कि येह बारगाह वोह अ़ज़ीम बारगाह है जहां किसी को कुछ ना उम्मीदी और मायूसी नहीं, सब को नवाज़ा जाता है। फ़िरिश्ते जो कि गुनाहों से पाक साफ़ और मा'सूम हैं इन को तो एक बार हाज़िरी की इजाज़त मिली है जब कि गुनहगार उम्मती शहरे मदीना में सारी ज़िन्दगी भी गुज़ारना चाहे तो उसे इस की इजाज़त है, कोई उसे रोकने वाला नहीं। आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ कुछ इस त़रह़ अ़र्ज़ करते हैं :

मदीने जाएं फिर आएं दोबारा फिर जाएं　　*इसी में उ़म्र गुज़र जाए या ख़ुदा या रब*

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

आ़शिक़े मदीना का मदीने में अढ़ाई माह क़ियाम

आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत ने 1980 के सफ़रे मदीना में शव्वाल शरीफ़ से ज़ुल ह़ज शरीफ़ के आख़िर या दरमियान तक तक़रीबन अढ़ाई माह अपनी ज़िन्दगी के अनमोल तरीन लम्ह़ात फ़ज़ाए अ़रब में गुज़ारने के बा'द जब मदीनए पाक से जुदा होने लगे तो आप के लिये वोह वक़्त बहुत बड़े सानिह़े (या'नी ह़ादिसे) से कम न था, आप मदीनए पाक की जुदाई में बेह़द ग़मगीन थे और ग़म कैसे न हो, ऐसा दिलकशो ह़सीन मन्ज़र निगाहों से ओझल हुवा चाहता है, मदीनए पाक से किसी सच्चे आ़शिक़े रसूल की ज़ाहिरी जुदाई आसान नहीं, जब मदीनए पाक से जुदाई का वक़्त क़रीब आता है तो आ़शिक़ों का कलेजा मुंह को आ जाता है, वोह

दरो दीवार, वोह मस्जिदे नबवी और वोह सब्ज़ गुम्बद और मीनार छोड़ने को जी नहीं चाहता। फूट फूट कर रोने को जी चाहता है बल्कि दिल करता है कि यहीं ईमानो आ़फ़ियत के साथ जन्नतुल बक़ीअ़ में ख़ैर से दो गज़ ज़मीन मिल जाए और ज़िन्दगी की ह़सरत पूरी हो जाए.....

त़यबा से लौटना किसी आ़शिक़ से पूछिये   ऐसा लगे कि रूह़ बदन से गुज़र गई

एक और शाइ़र ने भी क्या ख़ूब कहा है :

दिल तड़प जाएगा ऐ ज़ाइरे बत़्ह़ा तेरा   तेरी जिस वक़्त मदीने से जुदाई होगी

महजूरे मदीना (या'नी मदीने से जुदा होने वाले) का ह़ाल

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मदीनए मुनव्वरह से चलते वक़्त ज़ाइरीन का जो ह़ाल होता है वोह न पूछो, मदीने के दरो दीवार का फ़िराक़ (या'नी जुदा होना) सताता है। मैं ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ की चौखट से लिपट कर लोगों को रोते देखा है।

बदन से जान निकलती है आह सीने से   तेरे फ़िदाई निकलते हैं जब मदीने से

फ़क़ीर ने तीसरे ह़ज पर रुख़्सत के वक़्त मदीने के दरो दीवार से अ़र्ज़ किया था :

जा रहा है अब हमारा क़ाफ़िला   ऐ दरो दीवारे शहरे मुस्त़फ़ा
याद तेरी जिस घड़ी भी आएगी   है यक़ीं दिल को बहुत तड़पाएगी

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/506)

कलाम : अल वदाअ़ ताजदारे मदीना

आ़शिक़े मदीना, अमीरे अहले सुन्नत ग़मे मदीना में रोते रहते थे। इन्ही दिनों आप ने मदीनए मुनव्वरह में अपने ग़मज़दा दिल के जज़्बात का इज़्हार अपने शफ़ीक़ो मेहरबान आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस

पनाह में ऐन सुनह्री जालियों के सामने रोते रोते अश्आ़र की सूरत में किया। तक़रीबन निस्फ़ सदी (या'नी पचास साल) होने वाले हैं, येह कलाम अपने अन्दर ऐसा दर्द और सोज़ो रिक़्क़त रखता है कि अब भी अगर कोई पढ़ता है तो आंखों में आंसू आ जाते हैं। आप भी इस अल वदाअ़ के अश्आ़र पढ़िये :

आह ! अब वक़्ते रुख़्सत है आया
अल वदाअ़ आह शाहे मदीना[1]

आह अब वक़्ते रुख़्सत है आया — अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
सद्मए हिज्र कैसे सहूंगा — अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
बे क़रारी बढ़ी जा रही है — हिज्र की अब घड़ी आ रही है
दिल हुवा जाता है पारा पारा — अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
किस त़रह़ शौक़ से मैं चला था — दिल का ग़ुन्चा ख़ुशी से खिला था
आह ! अब छूटता है मदीना — अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
कूए जानां की रंगीं फ़ज़ाओ ! — ऐ मुअ़त्त़र मुअ़म्बर हवाओ !
लो सलाम आख़िरी अब हमारा — अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
काश ! क़िस्मत मेरा साथ देती — मौत भी यावरी मेरी करती
जान क़दमों पे कुरबान करता — अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
सोज़े उल्फ़त से जलता रहूं मैं — इ़श्क़ में तेरे घुलता रहूं मैं
चाहे दीवाना समझे ज़माना — अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
मैं जहां भी रहूं मेरे आक़ा — हो नज़र में मदीने का जल्वा
इल्तिजा मेरी मक़्बूल फ़रमा — अल वदाअ़ आह शाहे मदीना

1... 1980 के सफ़रे मदीना में येह कलाम लिखने के बा'द से अब 2024 तक इस कलाम में कुछ ज़रूरी तब्दीली की गई है।

कुछ न हुस्ने अ़मल कर सका हूं
नज़्र चन्द अश्क मैं कर रहा हूं
बस येही है मेरा कुल असासा
अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
आंख से अब हुवा ख़ून जारी
रूह पर भी हुवा रन्ज त़ारी
जल्द अ़त्त़ार को फिर बुलाना
अल वदाअ़ आह शाहे मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 373)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अल वदाई कलाम की मक़्बूलिय्यत

बारगाहे रिसालत में अपने आ़शिक़े सादिक़ की येह अल वदाअ़ क़बूल हो गई, वोह इस त़रह़ कि जब आ़शिक़े मदीना, अमीरे अहले सुन्नत ने येह अल वदाअ़ लिखी तो एक आ़शिक़े रसूल को ख़्वाब में दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नसीब हुवा जैसा कि

मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी अ़ब्दुल क़ादिर अ़त्त़ारी नेकी की दा'वत आ़म करने में मसरूफ़ रहते, दीनी काम का इस क़दर जज़्बा था कि रोज़ाना मुख़्तलिफ़ मसाजिद में जा जा कर फ़ैज़ाने सुन्नत से 6 दर्स दिया करते। ज़ोह्र में तो दो दर्स देते, एक 1:30 बजे वाली नमाज़ में और, दूसरा 2:00 बजे वाली जमाअ़ते ज़ोह्र के बा'द। इन्हें रमज़ानुल मुबारक 1408 में उ़म्रह की सआ़दत ह़ासिल हुई, उसी रमज़ानुल मुबारक के जुमुअ़तुल वदाअ़ के दिन ऐ़न जवानी में इन्तिक़ाल फ़रमा गए। इन के बड़े भाई का कहना है कि एक बार अ़ब्दुल क़ादिर भाई को सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इल्यास क़ादिरी को मेरा सलाम कहना और कहना कि जो तुम ने "**अल वदाअ़ ताजदारे मदीना**" वाला क़सीदा लिखा है, वोह हमें बहुत पसन्द आया है और कहना कि अब

की बार जब मदीने आओ तो कोई नई "अल वदाअ़" लिखना और मुम्किन न होतो वोही अल वदाअ़ सुना देना।

सुनहरियों जालियों के सामने आख़िरी ह़ाज़िरी

जब वोह पुरदर्द लम्ह़ात आए कि अब मदीनए त़य्यिबा से जुदा होना ही पड़ेगा, अमीरे अहले सुन्नत बारगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अल वदाई ह़ाज़िरी और गोया वापसी की इजाज़त लेने के लिये ह़ाज़िर होने लगे तो दिल ग़म से चूर चूर था। क़दम उठ नहीं रहे थे उठाए जा रहे थे। आप पर आख़िरी ह़ाज़िरी के लिये रौज़ए अन्वर की जानिब बढ़ते हुए ऐसी दीवानगी भरी कैफ़िय्यत त़ारी थी कि सामने आने वाले दरो दीवार को बे इख़्तियार चूम लेते, यहां तक कि फूलों, पौदों और पत्तों को भी चूमते। इसी कैफ़ो मस्ती के आ़लम में जब आप एक पौदे को चूमने झुके तो उस के साथ लगे एक ख़ारे मदीना (या'नी मदीने के कांटे) ने गोया आगे बढ़ कर आप को चुटकी भर ली और आंख के पपोटे पर लग गया और ज़रा सा ख़ून उभरा। ताज़ा ज़ख़्मे मदीना लिये मस्जिदे नबवी शरीफ़ में दाख़िल हुए और बे क़रारी के आ़लम में अल वदाई सलाम अ़र्ज़ करने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए और ख़ूब रो रो कर दबे अन्दाज़ में अल वदाई सलाम व कलाम पेश किया। अल वदाई सलाम और गोया वापसी की इजाज़त ले कर उलटे क़दमों लौटे। जी! उलटे क़दमों क्यूं कि येह वोह पाक बारगाह है जहां पीठ करना भी आ़शिक़े रसूल के लिये बे अदबी है। आप इसी ग़म व सदमे से रोते रोते बाहर आ रहे थे, ज़मानए ह़ज था, दुन्या भर से हुज्जाजे किराम मदीनए पाक में ह़ाज़िर हो रहे थे, लोग इस आ़शिक़े मदीना को देख रहे थे कि न जाने येह क्यूं रो रहा है! इतने में आगे बढ़ कर

एक हम वतन शख़्स ने पूछ ही लिया : भाई साहिब ! क्या हुवा ? आप इतना क्यूं रो रहे हो ? आ़शिक़े सादिक़ के दिल पर येह सुवाल **"ज़ख़्म पर नमक से कम न था"** येह वोह ज़ख़्म था जो सर की आंखों से नहीं दिल की आंखों से दिखाने वाला था, आ़शिक़े मदीना अपने दिल की ह़ालत उसे कैसे दिखाएं और बताएं। उस के सुवाल का जवाब आंखों की ज़बान (या'नी आंसूओं) से देने वाला था, आप ने रोते रोते जवाब दिया : मैं मदीने से जा रहा हूं। इश्क़े मदीना और इश्क़े शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की लज़्ज़त से ना वाक़िफ़ को इस लज़्ज़त का अन्दाज़ा नहीं हो सकता है क्यूं कि जिस ने भर भर के इश्क़े रसूल के जाम पिये हों उस में और जिस ने कभी ऐसा पढ़ा, देखा या सुना न हो उस की कैफ़िय्यत में ज़मीनो आस्मान से भी ज़ियादा फ़र्क़ होता है। आ़शिक़े मदीना के लिये येह वक़्त दिल पर गिरने वाले सदमों के पहाड़ जैसा था, इस बात को एक शाइ़र ने बड़े प्यारे अन्दाज़ में बयान किया है :

येह तो त़यबा की मह़ब्बत का असर है वरना कौन रोता है लिपट कर दरो दीवार के साथ

तुम जा नहीं रहे, आ रहे हो

बारगाहे रिसालत से रुख़्सत हो कर आ़शिक़े मदीना अपने पीरो मुर्शिद की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, मुरीद में पाई जाने वाली अच्छी आ़दात पीरो मुर्शिद की बदौलत ह़ासिल होती हैं। आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत को ग़मे मदीना की सौग़ात भी पीरो मुर्शिद की बारगाह ही से मिली तो आ़शिक़े मदीना अपने ग़मो अलम के मदावे के लिये रोते, आंखें मलते, लड़खड़ाते सय्यिदी व मुर्शिदी, शैख़ुल अ़रब वल अ़जम, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, क़ुत़्बे मदीना अलह़ाज ज़ियाउद्दीन मदनी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के आस्तानए

आ़लिया पर पहुंचे और पीरो मुर्शिद की गोद में सर रख कर रोने लगे। **अल्लाह** वाले आ़शिक़े मदीना के दिल की कैफ़िय्यत को जानते हैं और वोही इस ज़ख़्म पर मरहम रख सकते हैं। सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने मुरीद अमीरे अहले सुन्नत के ग़मज़दा दिल का इलाज कर दिया :

हूं ज़ियाउद्दीन का अदना गदा

मेरे मुर्शिद का सख़ी दरबार है

वोह ऐसे कि जब सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने आप से पूछा कि क्या हुवा ? आप ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आज मेरी मदीने शरीफ़ से रुख़्सती है। ह़ज़रत ने शफ़्क़त का हाथ फेरा और फ़रमाया : "**आप मदीने से जा नहीं रहे बल्कि आ रहे हैं।**"

ग़मो अलम में डूबी उस कैफ़िय्यत में आ़शिक़े मदीना फ़ौरन समझ न सके कि पीरो मुर्शिद के इस फ़रमाने आ़लीशान के अन्दर क्या क्या राज़ छुपे हैं चूंकि वलिये कामिल की ज़बाने मुबारक से निकला है और यक़ीनन बड़ों की बातें बड़ी होती हैं, फिर उस 1980 के सफ़रे मदीना के बा'द से ता ह़ाल 2024 तक दसियों बार आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को ह़ाज़िरिये मदीना के मुज़्दे (या'नी ख़ुश ख़बरियां) मिले। पीरो मुर्शिद के इन मुबारक अल्फ़ाज़ "**आप मदीने से जा नहीं रहे बल्कि आ रहे हैं**" का मत़लब येह था। अमीरे अहले सुन्नत अपने पीरो मुर्शिद के इस मुबारक जुम्ले को अश्आ़र में यूं बयान करते हैं :

मुर्शिदी ने कहा, तू नहीं जा रहा बल्कि है आ रहा, मैं मदीने में हूं

मदीने का पक्का वीज़ा लगवाने की ऑफ़र

आ़शिक़े मदीना के एक दोस्त जो मदीनए पाक ही में रहते थे, आप

से बहुत महब्बत करते थे, उन्हों ने आप को ऑफ़र की, कि मैं सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़े की त़रफ़ हाथ कर के कहता हूं, आप हां बोलो तो मैं मदीने शरीफ़ में आप की रिहाइश का इन्तिज़ाम कर देता हूं और आप का पक्का वीज़ा लगवा देता हूं। आ़शिके़ मदीना अगर्चे महब्बते मदीना का जाम पिये हुए थे मगर अपने दिल के जज़्बात पर क़ाबू पाते हुए शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों का पैग़ाम दुन्या भर में आ़म करने का जज़्बा रखते थे, आप के इस जज़्बे पे लाखों सलाम कि आप ने अपने उस दोस्त से फ़रमाया : اَلْحَمْدُلِلّٰه ! मुझे अपने मुल्क में जिस त़रह़ दीन की ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल है यहां ब ज़ाहिर ऐसे मुम्किन नहीं लिहाज़ा यहां मुस्तकि़ल ठहर नहीं सकता, गोया आप की कैफ़िय्यत ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मुह़द्दिसे आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद अशरफ़ी जीलानी किछौछवी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के इस शे'र के मिस्दाक़ थी :

मदीने का कुछ काम करना है सय्यिद   मदीने से बस इस लिये जा रहा हूं

(फ़र्श पर अ़र्श, स. 158)

दीन की ख़िदमत का जज़्बए बे मिसाल

ऐ आ़शिक़ाने मदीना ! यहां एक बात अ़र्ज़ करता चलूं कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सब से बड़े आ़शिक़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان थे। **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब इस दुन्या से ज़ाहिरी इन्तिक़ाल शरीफ़ फ़रमाया तो मदीनए पाक में मौजूद हज़ारों सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने दीने इस्लाम और पैग़ामे रसूले अनाम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आ़म करने के लिये दुन्या के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों की त़रफ़ रुख़ किया और फिर

सारी ज़िन्दगी नेकी की दा'वत में गुज़ारी जिस की बड़ी मिसाल येह है कि एक क़ौल के मुताबिक़ हज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर एक लाख चौबीस हज़ार सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मौजूद थे। जब कि आज मदीनए पाक के मश्हूर क़ब्रिस्तान "**जन्नतुल बक़ीअ़ शरीफ़**" में सिर्फ़ दस हज़ार सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मज़ारात शरीफ़ हैं। किसी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का मज़ार शरीफ़ इराक़ में तो कोई हिन्दूस्तान में आराम फ़रमा हैं, किसी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का मज़ार शरीफ़ तुर्किया में तो किसी सहाबिये रसूल का मज़ार शरीफ़ चीन में जगमगा रहा है। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक में जा कर कुरआनो सुन्नत का पैग़ाम आ़म किया।

जज़्बाते आ़शिक़े मदीना दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदारान के नाम

1980 के सफ़रे मदीना के वक़्त दा'वते इस्लामी नहीं बनी थी, लेकिन आ़शिक़े मदीना का दीने इस्लाम की ख़िदमत का जज़्बा उ़रूज पर था। आप उस वक़्त भी मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में कुछ न कुछ लोगों को जम्अ़ कर के दीन का काम करते थे। ह़क़ीक़ी आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत नेकी की दा'वत के जज़्बे से सरशार लोगों में नेकी की दा'वत आ़म करने का पक्का इरादा रखते हैं। आप ने कई बार दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदारान को कुछ इस त़रह़ मदनी फूलों से नवाज़ा है कि आप सारा साल मदीनए पाक की ह़ाज़िरी दें, ह़ज करें, उ़म्रह करें मगर रमज़ान शरीफ़ में मसाजिद में नमाज़ियों की बहुत बड़ी ऐसी ता'दाद आ जाती है जो सारा साल मस्जिद का रुख़ नहीं करती, अगर सब ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी नेकी की दा'वत देने के ऐसे अहम मौक़अ़ पर मदीने की त़रफ़ रुख़ कर लेंगे तो इन्हें आक़ाए मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर आ़मिल (अ़मल करने

वाला) कौन बनाएगा ? कौन इन्हें पक्का नमाज़ी और सच्चा आ़शिक़े रसूल बनाएगा ? मैं ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी को दरख़्वास्त ही कर सकता हूं, मदीने की हाज़िरियों के और भी मवाक़ेअ़ हैं, चलें एक बार रमज़ाने मदीना की सआ़दत ह़ासिल करें ।

इस मिसाल को यूं समझें कि मुख़्तलिफ़ ऐसे कारोबार करने वाले जिन का सीज़न रमज़ान शरीफ़ या ईदुल फ़ित्र होता है जैसे मिठाई बनाने वाले, दरज़ी वग़ैरा । अगर आप इन को फ़्री में भी रमज़ाने मदीना (या'नी रमज़ान शरीफ़ में उ़म्रे) का टिकट देंगे तो येह नहीं जाएंगे क्यूं कि इन्हें पता है कि इन दिनों काम कर के हम शायद दस टिकट की रक़म कमा लेंगे, मदीनए पाक किसी और महीने में चले जाएंगे, जब दुन्या की ह़क़ीर रक़म ह़ासिल करने का जज़्बा रखने वाले मुफ़्त में भी रमज़ाने मदीना की सआ़दत नहीं पा रहे तो नेकी की दा'वत आ़म करने और लोगों की इस्लाह़ का जज़्बा रखने वाला इस अ़ज़ीम मक़्सद को पूरा करने के लिये अपने वत़न में इस अहम मौक़अ़ पर नेकी की दा'वत के लिये क्यूं नहीं रुकता ? اَلْحَمْدُلِلّٰہِ الْكَرِیْم ! आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले आख़िरी अ़शरे और पूरे माहे रमज़ान के ए'तिकाफ़ में हज़ारों मो'तकिफ़ीन मसाजिद में आ जाते हैं, अगर ज़िम्मेदारान रमज़ाने मदीना के लिये चले जाएंगे तो इन मो'तकिफ़ीन में एक से एक बिगड़े हुओं की इस्लाह़ कौन करेगा ? इन में मौजूद सिर्फ़ रमज़ान शरीफ़ के नमाज़ियों को पूरे साल का नमाज़ी कौन बनाएगा ? इन्हें सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाला कौन बनाएगा ? **अल्लाह** करे दिल में उतर जाए मेरी बात...... इस ह़वाले

से एक दिलचस्प वाक़िआ पढ़िये और अपने अन्दर नेकी की दा'वत का जज़्बा पैदा कीजिये :

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकात हर जगह हैं

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं मदीनए पाक में रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िर हुवा तो मुझ पर एक ख़ास कैफ़िय्यत त़ारी हो गई और मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी ख़्वाहिश थी कि मदीनए मुनव्वरह आने के बा'द मुझे दोबारा अपने वत़न जाना नसीब न हो । इस पर क़ब्रे अन्वर से आवाज़ आई : अगर मैं अपनी इस क़ब्र में क़ैद हूं तो फिर यहां आने वाले हर शख़्स को यहीं रह जाना चाहिये और अगर मैं हर ह़ाल में अपनी उम्मत के साथ हूं तो तुम्हें वापस अपने शहर चले जाना चाहिये । वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह सुन कर मैं अपने वत़न फ़ास वापस आ गया । (الابریز، 2/88) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلَّی اللهُ علیهِ واٰلهٖ وسلَّم

पए तब्लीग़े सुन्नत तू जहां रख्खे मगर ऐ काश !
मैं ख़्वाबों में पहुंचता ही रहूं अक्सर मदीने में

गोया घर में इन्तिक़ाल हो गया हो

आ़शिक़े मदीना, शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अपने पीरो मुर्शिद की ख़िदमत में अल वदाई ह़ाज़िरी देने के बा'द अपनी क़ियाम गाह आए, चूंकि वहां रहते हुए कुछ लोगों से जान पहचान हो गई थी और लोग आ आ कर मिल रहे थे जब कि आ़शिक़े मदीना के दिल की कैफ़िय्यत ऐसी थी कि गोया उन के हां कोई इन्तिक़ाल हो गया है और लोग ता'ज़ियत

के लिये आ रहे हैं, बिल आख़िर वोह घड़ी आई कि आ़शिक़े मदीना फ़िराक़े मदीना (या'नी मदीने की जुदाई) का ग़म लिये गाड़ी में बैठ कर सूए जद्दा शरीफ़ रवाना हुए गोया येह शे'र ज़बान पर था :

रौज़े की जाली दिल में बसा लूं तन मन धन सब उन पे लुटा दूं

वक़्ते ज़ियारत ज़ाइर के दिल में होते हैं क्या जज़्बात न पूछो

जद्दा शरीफ़ हाज़िरी और नमाज़ की फ़िक्र

1980 के सफ़रे मदीना की आख़िरी रात में आ़शिक़े मदीना, मदीनए पाक से रुख़्सत हुए, गाड़ी तेज़ी से जद्दा शरीफ़ की जानिब दौड़े जा रही थी कि जद्दा शरीफ़ से कुछ ही फ़ासिले पर आ़शिक़े मदीना की नज़र आस्मान पर पड़ी तो मह़सूस हुवा कि फ़ज्र का वक़्त शुरूअ़ हो गया है। हिज्रे मदीना का सदमा अपनी जगह था और फ़र्ज़ नमाज़ का जज़्बा भी सलामत था, आप उठे और **"नमाज़ का वक़्त हो गया है ! नमाज़ का वक़्त हो गया है !"** की सदा लगाना शुरूअ़ की। दा'वते इस्लामी के वुजूद में आने से क़ब्ल 12 दीनी कामों में से एक दीनी काम **"फ़ज्र के लिये जगाना"** आप का मा'मूल था। आ़शिक़े मदीना की नमाज़े फ़ज्र के लिये लगाई गई सदाओं पर किसी ने ख़ातिर ख़्वाह तआ़वुन न किया, आप चलते हुए, ड्राइवर के पास पहुंचे और उसे गाड़ी रोकने का फ़रमाया कि फ़ज्र का वक़्त हो गया है। आह ! मह़रूमी की इन्तिहा कि उस ने भी कोई लिफ़्ट न कराई। आप का दिल बहुत अफ़्सुर्दा हुवा और अपनी सीट पर आ कर बैठ गए, कुछ देर बा'द दोबारा आस्मान की जानिब देखा तो उजाला बढ़ चुका था।

आ़शिके़ मदीना ने एक बार हिम्मत की और हुज्जाज से भरी बस को नमाज़ पढ़ने की दा'वत दी मगर किसी ने कोई ख़ास तवज्जोह न दी। बे बसी की इन्तिहा कि न ड्राइवर गाड़ी रोकता है और न कोई साथ बढ़ कर नमाज़ के लिये उतरता है। ह़ज के बा'द इ़बादतो रियाज़त का ज़ौक़ो शौक़ बढ़ने की बजाए हुज्जाज ख़्वाबे ख़रगोश के मज़े ले रहे थे, नींद और वोह भी ऐसी कि कोई उठने को तय्यार नहीं। आ़शिके़ मदीना का दिल ग़मे मदीना से पहले ही बे क़रार था, अब इस बात का सदमा कि बैठे बैठे कैसे नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा हो, सफ़रे ह़ज की त़रह़ इस मौक़अ़ पर भी वुज़ू के लिये पानी की बोतल आप के साथ थी मगर बस में वुज़ू कैसे किया जाए, ख़ैर जैसे तैसे तयम्मुम कर के सीट पर बैठे बैठे ही नमाज़ अदा की, इस के इ़लावा और किया भी क्या जा सकता था, कुछ ही देर में जद्दा शरीफ़ आ गया, हो सकता है ड्राइवर ने येही सोच कर गाड़ी न रोकी हो कि जद्दा शरीफ़ पहुंच कर नमाज़ अदा करेंगे अगर्चे ऐसा करना नहीं बिल ख़ुसूस ऐसी नमाज़ों फ़ज्र व अ़स्र और मग़रिब में कि इन का वक़्त कम होता है, मन्ज़िल पर पहुंचते पहुंचते रास्ते में कहीं गाड़ी ख़राब हो गई तो नमाज़, वुज़ू के लिये मुसाफ़िरों को बड़ी आज़्माइश होगी लिहाज़ा सफ़र के दौरान जो पहला मौक़अ़ आए वहीं ठहर कर नमाज़ अदा कर लेनी चाहिये। जद्दा शरीफ़ के स्टॉप पर जैसे ही गाड़ी रुकी, आ़शिके़ मदीना जल्दी से उतरे, अपना सामान फ़ुटपाथ पर डाला और पानी की बोतल निकाल कर वुज़ू कर के नमाज़े फ़ज्र अदा की और सलाम फेरते ही घड़ी से देख कर वक़्त नोट कर लिया। उन दिनों आज की त़रह़ नमाज़ के अवक़ात की कोई एप या नेट सिस्टम तो था नहीं।

बा'द में जब केलेन्डर से फ़ज्र का वक़्त मिलाया तो ज़ाहिर हो गया कि اَلْحَمْدُلِلّٰه ! आप की नमाज़े फ़ज्र वक़्त में ही अदा हुई थी। इस ने'मत की ख़ुशी भी दीदनी (या'नी देखने से तअ़ल्लुक़ रखती) थी। काश ! हमें भी अपनी नमाज़ों की ऐसी फ़िक्र नसीब हो जाए। आ़शिक़े मदीना वहां से अपने किसी दोस्त के हां पहुंचे, कुछ वक़्त वहां रुकने के बा'द मत़ार (एरपोर्ट) रवाना हुए और फिर फिर...... सूए वत़न......

रोता हुवा पहुंचा था रोता हुवा लौटा था हैं वस्ल की दो घड़ियां फिर हिज्रे मदीना है

(वसाइले बख़्शिश, स. 494)

मदीने से लौटने वाले को पैग़ामे रज़ा

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मदीनए पाक से लौटने वाले ज़ाइरे मदीना को फ़रमाते हैं : वक़्ते रुख़्सत मुवाजहए अन्वर में ह़ाज़िर हो और हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से बार बार इस ने'मत (या'नी मदीनए पाक की ह़ाज़िरी) की अ़त़ा का सुवाल करो और तमाम आदाब कि का'बए मुअ़ज़्ज़मा से रुख़्सत में गुज़रे मल्ह़ूज़ (पेशे नज़र) रखो और सच्चे दिल से दुआ़ करो कि इलाही ! ईमान व सुन्नत पर मदीनए त़य्यिबा में मरना और बक़ीए़ पाक में दफ़्न होना नसीब कर। اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا اٰمِيْن اٰمِيْن اٰمِيْن يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْن وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَابْنِهٖ وَحِزْبِهٖ اَجْمَعِيْن اٰمِيْن وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن

(फ़तावा रज़विय्या, 10/769)

अ़र्ज़े गदा ब वक़्ते वदाअ़

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने तीसरी मरतबा ह़ज पर मदीनए पाक से वापसी पर अल वदाअ़ लिखी थी, जौक़े मुत़ालआ़ के लिये वोह पेश की जाती है :

अल फ़िराक़ ऐ रह़मतुल्लिल आ़लमीं
अल वदाअ़ ऐ सब्ज़ गुम्बद के मकीं

अल फ़िराक़ ऐ ख़ल्क़ के मुश्किल कुशा
अल वदाअ़ ऐ मज़्हरे ज़ाते ख़ुदा

अल फ़िराक़ ऐ महबिते वह़्ये ख़ुदा
अल वदाअ़ ऐ शहरे पाके मुस्त़फ़ा

ऐ दरो दीवारे शहरे मुस्त़फ़ा
जा रहा है अब हमारा क़ाफ़िला

है यक़ीं दिल को बहुत तड़पाएगी
याद तेरी जिस घड़ी भी आएगी

लो ग़ुलामों का सलामे आख़िरी
ऐ दिलों के चैन ऐ प्यारे नबी

अ़र्ज़ करने को ग़ुलामाना सलाम
दूर से आए थे परदेसी ग़ुलाम

येह तो फ़रमाओ कि बुलवाओगे कब
आस्ताने से वदाअ़ होते हैं अब

रखना अपने साए में हम को सदा
चश्मे रह़मत से न तुम करना जुदा

दामने मह़बूब में फूलो फलो
ऐ मदीने वालो तुम सब ख़ुश रहो

याद हम को भी कभी कर लीजियो
अ़र्ज़ इतनी है मगर ऐ दोस्तो !

ख़ूब जी भर कर येह गुम्बद देख लो
आख़िरी दीदार है ऐ ज़ाइरो

फिर मुक़द्दर में हो आना या न हो
क्या ख़बर है ख़ूब दिल में सोच लो

फ़ासिला कोसों हुवा जाता है अब
येह कोई दम में छुपा जाता है अब

दीदे आख़िर को ग़नीमत जान लो
फिर कहां तुम और कहां येह दोस्तो

ज़िन्दगी में फिर मदीना दे दिखा
है दुआ़ सालिक की ऐ बारे ख़ुदा

(दीवाने सालिक, स. 120)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अल वदाअ़ ताजदारे मदीना

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब किसी शख़्स को वदाअ़ फ़रमाते तो उस का हाथ पकड़ लेते, ख़ुद उसे न छुड़ाते ह़त्ता कि वोह शख़्स ही हुज़ूर नबिय्ये करीम

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हाथ छोड़ देता और फ़रमाते : “मैं तेरा दीन, तेरी अमानत और तेरा आख़िरी अ़मल **अल्लाह** के सिपुर्द करता हूं।” और एक रिवायत में है : “ख़ातिमे का अ़मल।” (ترمذی،5/277،حدیث:3453)

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सफ़र को जाते वक़्त हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते थे और इस बारगाहे आ़ली से वदाअ़ होते थे, उस वक़्त का यहां ज़िक्र हो रहा है, अब भी ज़ाइरीन मदीनए मुनव्वरह से चलते वक़्त आख़िरी सलाम के लिये रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करते हैं : “अल वदाअ़ अल वदाअ़ **या रसूलल्लाह** ! अल फ़िराक़ अल फ़िराक़ **या ह़बीबल्लाह** !” हम ने एक वदाइ़या क़सीदा अ़र्ज़ किया था जिस के कुछ शे'र येह हैं :

दूर से आए थे परदेसी ग़ुलाम — अ़र्ज़ करने को ग़ुलामाना सलाम
आस्ताने से वदाअ़ होते हैं अब — येह तो फ़रमाओ कि बुलवाओगे कब
चश्मे रह़मत से न तुम करियो जुदा — रखियो अपने साए में हम को सदा

मुफ़्ती साह़िब मज़ीद फ़रमाते हैं : येह हुज़ूर की बन्दा नवाज़ी और शाने करीमाना है कि ग़ुलामों से ख़ुद हाथ नहीं छुड़ाते, अब भी वोह हम गुनहगारों को ख़ुद नहीं छोड़ते, **अल्लाह** तआ़ला इन के क़दमों से वाबस्तगी अ़त़ा करे। इस दुआ़ में लत़ीफ़ इशारा इस जानिब भी है कि ऐ मदीने में मेरे पास रहने वाले ! अब तक तू मेरे साए में था कि हर मस्अला मुझ से पूछ लेता था, हर मुश्किल मुझ से ह़ल कर लेता था, अब तू मुझ से दूर हो रहा है कि हर ह़ाजत में मुझ से पूछ न सकेगा तो तेरा हर काम ख़ुदा के सिपुर्द

है। कैसी प्यारी दुआ़ है और कैसी मुबारक वदाअ़ !

(मिरआतुल मनाजीह़, 4/43 मुल्तक़त़न)

मस्जिदे माइदा

मस्जिदे बनी ज़फ़र के क़रीब ही "मस्जिदे माइदा" वाके़अ़ थी। मन्क़ूल है, येह उसी मक़ाम पर बनी थी जिसे सुल्त़ाने कौनो मकान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नजरान के नसरानियों के साथ मुबाहले के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया था और जिस जगह सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ने सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये लकड़ियां गाड़ कर अपनी चादर तान कर साएबान खड़ा किया था और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अहले बैत के हमराह वहां तशरीफ़ लाए थे। एक तारीख़ी रिवायत के मुत़ाबिक़ इस मक़ाम पर आक़ाए नामदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अहले बैते अत़्हार के लिये जन्नत से "पांच पियालों" में खाना नाज़िल हुवा था। इस लिये इसे "मस्जिदे पन्ज पियाला" भी कहते हैं। यहां आ़शिक़ाने रसूल ने बत़ौरे यादगार गुम्बद बनाए थे। 1400 हि. में सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ ने उस मुक़द्दस मक़ाम के खंडर की ज़ियारत की थी, गुम्बद वग़ैरा मौजूद नहीं थे और येह लिखते वक़्त फ़ज़ाओं के सिवा कुछ नहीं बचा। आ़शिक़ाने रसूल के लिये उन फ़ज़ाओं की ज़ियारत कर के इश्क़े रसूल में दिल जलाना भी बहुत बड़ी सआ़दत है। (आ़शिक़ाने रसूल की 130 हिकायात, स. 309)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ह़फ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ/ ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत अलह़ाज अबू उसैद उ़बैद रज़ा मदनी مُدَّظِلُّہُ الْعَالِی की जानिब से हर हफ़्ते एक रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दी जाती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ الْکَرِیْم ! लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें येह रिसाला पढ़ या सुन कर अमीरे अहले सुन्नत/ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत की दुआ़ओं से ह़िस्सा पाते हैं। येह रिसाला pdf में दावते इस्लामी की वेबसाइट से फ़्री डाउनलोड किया जा सकता है। सवाब की निय्यत से ख़ुद भी पढ़ें और अपने मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम करें।

(शोबा : हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़)